:नवरात्री महोत्सव पर स्वमानों का अभ्यास:

१. सर्व दु:खी और अशान्त आत्माओं को सुख, शान्ति का अमर वरदान देकर सबकी मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली मैं **माँ जगदम्बा** हूँ।
अनेकों की मनोकामना पूर्ण करने वाली, चिंताओं से मुक्त करानेवाली मैं साक्षात **जगदम्बा** हूँ।

२. सर्व शक्तिमान परमात्मा शिव से प्राप्त ईश्वरीय शक्तियों द्वारा विकारों रूपी मैशासुर का नाश करने वली मैं शिव शक्ति स्वरुपा **माँ दुर्गा** हूँ।
सर्व शक्तिवान बाप से शक्ति का वरदान प्राप्त करने वाली, प्रकृतीजीत, शेर पर सवारी करने वाली मैं शेरनी शक्ति **माँ दुर्गा** हूँ।

३. सर्व आत्माओं को ज्ञान धन एवं गुण रुपी हीरे मोतियों से सुसज्जित कर सुख समृद्धि का अखुट भंडारा देने वाली, सर्व की आराध्य देवी मैं **माँ लक्ष्मी** हूँ।
सभ्य, सत्य लक्षणों को धारण करने वाली, ज्ञान रत्नों से झोली भरने वाली मैं कमल पुष्प पर विराजमान **श्री महालक्ष्मी** हूँ।

४. ज्ञान वीणा के झनकार द्वारा मानव को अज्ञान अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली मैं श्वेत वस्त्र धारिणी, हंस वाहिणी, तपस्विणी, ब्रह्मा कुमारी **माँ सरस्वती** हूँ।
ज्ञानसागर से मिले हुए ज्ञान बिंदुओं को चिंतन कर, लाईटहाउज बन अनेक आत्माओं का जीवन ज्ञानरोशनी से प्रकाशमय बनानेवाली विद्या की देवी **माँ सरस्वती** हूँ।

५. विषय विकार मिटाकर सर्व मनुष्य मात्र में पवित्रता का प्रकाश भर उन्हें देवत्व प्रदान कराने वाली मैं **वैष्णवी देवी** हूँ।
उंच ते उंच अरावली पर्वत पर बसे हुए पाण्डव भवन में राजयोग की तपस्या करने वाली मैं निर्विकारी, विषय विकार हरनी **वैष्णवी देवी** हूँ।

६. विशाद में डूबे मनुष्य आत्माओं के दुखों को दूर कर सबके मन को हर्षाने वाली, खुशी का वरदान लुटाने वाली मैं आनंदमय **गायत्री देवी** हूँ।
मैं गउपाल शिवबाबा के द्वारा ज्ञान का घास खाकर सबको ज्ञान घास खिलाने वाली पवित्र गोमाता अर्थात **गायत्री देवी** हूँ।

७. मैं उजवल निर्मल, सर्व ईश्वरीय प्राप्तियों से संपन्न, असंतुष्ट आत्माओं को संतुष्ट करने वाली मैं संतुष्टमणी, राजयोगिनी, शिव शक्ति **माँ संतोषी** हूँ।
सतगुरु से मिले हुए वरदानों को बाँटनेवाली, भक्त आत्माओं को मेरे द्वारा संतुष्टताधन प्राप्त कराने वाली, वरदानी मैं **संतोषी माता** हूँ।

८. मनुष्य आत्माओं पर लगे हुए आसुरी संस्कारों के कलंक को मिटाने वली मैं शिव शक्ति **माँ काली** हूँ।

९. पापरुपी महिषासूर पर विजय प्राप्त करने वाली, अनेकों को विजयी भव का वरदान देनेवाली मैं महिषासूरमर्दिनी **भवानी देवी** हूँ।

१०. पदमों की कमाई कराके, कदम में पदम का अनुभव कराने वाली **पदमावती देवी** हूँ।

११. दु:खी और हताश मनुष्य आत्माओं के अंदर उमंग उल्हास भरने वाली मैं **उमा देवी** हूँ।

१२. भारत वासियों को फर से स्वर्णिम दुनिया की याद दिलाकर अनेकों का तन, मन, धन इस कार्य में सफल कराने वाली भाग्यविधाता **भारत माता** हूँ।

१३. मैं आत्मा सर्व विकारों रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर **बाप समान संपूर्ण** बन गई हूँ।

———